आइये, अभिनय करना सीखें

• ब्रह्माकुमार शिवकुमार, मधुबनी (बिहार)

कहा जाता है कि हर मनुष्य-आत्मा अभिनेता है, सृष्टि रंगमंच है। अभिनय पूरा करके आत्मा वापस चली जाती है। यह बात परमपिता परमात्मा शिव ने बहुत विस्तारपूर्वक समझाई है। दुनिया के लोग, अभिनेता कौन है, घर कौन-सा है, कहाँ है, आत्मा वहाँ से कैसे आती है, कैसे वापस जाती है आदि प्रश्नों से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। यदि वे इन सब बातों को जान जायें तो अपने अभिनय को सुधार सकते हैं।

कलियुग में हर आत्मा का अभिनय बिगड़ गया है। भले ही पर्दे पर या बनावटी रंगमंच पर वह अच्छा अभिनय कर लेती है, वाहवाही लूट लेती है, यहाँ तक कि पदक भी प्राप्त कर लेती है लेकिन घर-परिवार और समाज में वास्तविकता के धरातल पर जब अभिनय करती है तो फिसड्डी हो जाती है। इसके पीछे एक बहुत बड़ा कारण है। कारण यह है कि जब एक अभिनेता को निर्माता और निर्देशक का पता होता है और उनकी तरफ से बार-बार इशारा मिलता है तो उसका अभिनय ठीक तरह से होता जाता है। लेकिन सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली मनुष्यात्माओं को यह पता ही नहीं है कि सृष्टि ड्रामा का रचयिता, निर्देशक और मुख्य अभिनेता कौन है? जब ज्ञान ही नहीं है तो इशारा कैसे मिले? वह सोचती है कि मैं जो कर रही हूँ वह ठीक है।

सृष्टि के सभी चेतन प्राणियों में मनुष्यात्मा में सबसे अधिक योग्यतायें हैं। जलचर, नभचर, थलचर जितने भी पशु-पक्षी हैं, वे अपने संस्कारों के वशीभूत होते हैं, उनमें सर्वांगीण परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होती। उनके लिए भूत, वर्तमान, भविष्य एक जैसे हैं। इसके विपरीत, मानव आत्मा किसी हद तक तीनों कालों की जानकारी रखती है और उसमें इतनी शक्ति भी है कि वह समयानुसार अपनी भूमिका में परिवर्तन कर सके। लेकिन आज उसने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके देवताई अभिनय का परित्याग करके पशु-पक्षियों जैसा अभिनय सीख लिया है जिससे वह श्रेष्ठ से भ्रष्ट बन गयी है। अब उसे अपने अभिनय को बदलना है अर्थात् उसे श्रेष्ठ बनना है। लोग कहते हैं कि मनुष्य चौरासी लाख योनियाँ लेता है लेकिन परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि वह केवल चौरासी जन्म लेता है और वे भी मानव के रूप में। सतयुग और त्रेतायुग में वह दैवीगुणों से युक्त मानव था अर्थात् देवता था। अपने निर्माता और निर्देशक के इशारों प्रमाण चलता था। द्वापरयुग आया तो उन इशारों को कुछ-कुछ भूलने लगा, देवताई अभिनय की जगह मानवीय अभिनय करने लगा लेकिन कलियुग आते-आते तो वह इन इशारों को इतना अधिक भूल गया कि मानव के अभिनय से भी नीचे गिर गया। अब तो वह अभिनय में भी पशु-प्राणियों की नकल करने लगा है। कभी बिल्ली समान चोरी, कभी कुत्ते के समान काम विकार, कभी बगुले के समान धोखा, कभी कौए की तरह छीना-झपटी, कभी बकरी की तरह भय, कभी मछली की तरह जीभ का स्वाद, इस तरह की अनेक विकृतियाँ उसके अंदर आ गई हैं। शायद इसी कारण लोगों ने कह दिया है कि मनुष्यात्मा चौरासी लाख योनियाँ धारण करती है। भगवान शिव कहते हैं कि वह चौरासी लाख योनियों में सशरीर तो नहीं जाती लेकिन कलियुग के अन्त में विभिन्न योनियों के कुसंस्कार अवश्य अपना लेती है।

वर्तमान समय सृष्टि रंगमंच के मुख्य अभिनेता, निर्देशक व निर्माता परमपिता परमात्मा शिव एक वृद्ध ब्राह्मण प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके हमारे अभिनय को सुधार रहे हैं, हमें एक्टिंग कोर्स करा रहे हैं। इसका लाभ हम सभी मनुष्यात्माएँ ले सकते हैं, अपने अभिनय को सुधार कर सुपर स्टार बन सकते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी शाखाओं में यह कोर्स नि:शुल्क दिया जा रहा है, लाभ लेना न भूलें क्योंकि अभी नहीं तो कभी नहीं। ❖